जय हो! विजय हो!

प्रत्येक व्यक्ति हर कार्य में चाहता है जय और विजय।

विशेष जय को विजय कहते हैं।

जन्म से पूर्व हर प्राणी 'ज़िदगी को जीत सकता हूँ' जैसे दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास के साथ जन्म लेता है लेकिन फिर इस पराजय या हार की परम्परा क्या?

परन्तु कभी कभी ऐसा भी देखने में आता है कि जन्म के साथ ही कुछ लोग महानता लेकर आते हैं पुण्य पुरुष होते हैं। अपनी जन्म परम्परा के अन्तिम चरण में इन लोगों को सदैव जय-विजय ही मिलती है, हर काम आसानी से हो जाता है।

जो लोग पुण्य परुष नहीं है, पापा हैं, उनके जीवन में जय और पराजय दिन और रात की तरह एक के बाद एक आती रहती हैं। परन्तु जो पुण्य के बल पर विजय पाते रहते हैं, उन्हें भी विशेष पुण्य को इस जन्म में प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

विशेष पुण्य अर्थात ज्ञानदान! आत्मज्ञान दान!!

जो लोग ध्यान की अद्‌भुत साधना द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त कर अपने ज्ञान को सबमें बाँट कर दूसरों को भी ध्यान और आत्मज्ञान के प्रति आकर्षित करवाते हैं, वे ही पुण्यवान बनकर आसानी से अपने हर काम में जय और विजय पाते हैं।

यही ध्यान विजय है।